

नो विन्द्यात् ङा. Br. 14.4.11. त्रेधात्मानं विन्दयत् पृथिव्या तृतीयम् u. s. w. TS. 2.4.11. 3. तनः ङा. Br. 2.2.1. 14. — 2) *ablegen, niederlegen, wegstellen*: विनिधाय ततो भारं संनिधाय फलानि च MBh. 1.2984. पात्रम् सु. 2.152.4. — 3) *aufsetzen, auflegen, stellen —, legen auf*, in RĀGA-TAR. 2.104. मदनरिपुणा मूर्ध्नि धवलं कपालं यस्योच्चैर्विनिहितम् BHART. 3.61. स्तनविनिहितमपि हारम् Gīt. 4.11. मकरमधो विनिधाय करे च शरम् 6. *aufspeichern*: मधुगन्धतैलघृतफाणितानि विनिधाय द्विगुणा द्वितीयमासे लब्धिः VARĀH. BRH. S. 41 (40). 5. दृष्टिम् मनः *das Auge, den Sinn richten auf*: मयि विनिहितदृष्टिः MĀKĀ. 143.20. हरिविनिहितमनसाम् Gīt. 11.9. हृदि Jmd in's Herz schliessen: हृदि विनिधाय हृदिम् 31. *einsetzen in*: यत्राहं (Indra spricht) देवानमैन्द्रे विनिहितः पदे HARIV. 3988. — विनिहित MBh. 6.3678 fehlerhaft für विनिकृत.

— संनि 1) *zusammen niederlegen in oder bei, aufheben, niederlegen, legen in*: तन्वृणास्य गृहे संनिधावकै AIT. Br. 1.24. TS. 1.5.1. 1. TBh. 1.3.1. 1. ङा. Br. 3.4.1. 15. तेन (आदित्यः) सर्वान्प्राणान्निधाय संनिधत्ते PRAÇNOP. 1.6. ततो वित्तं विविधं संनिधाय ययोत्साहं कारयित्वा च कोशम् *aufspeichern, ansammeln* MBh. 14.290. मेघेपूर्ध्वं संनिधत्ते प्राणानो पवनः पतिः । तच्च मेघगतं वारि शक्नो वर्धति 13.3235. संनिध्यात् सु. 1.164.7. दूरादाकृत्य समिधः संनिध्याद्विकार्यसि M. 2.186. संनिधुस्तत्र पाण्डवा ज्ञायुधानि MBh. 1.482. 2984. R. 3.73.69. (कर्कटकम्) कर्पूरपुटिकामध्ये संनिधाय PĀNĀT. 263.5. दृष्टिम् *das Auge heften auf* (loc.), med. RAGH. 13.44. हृदयसंनिहित in's Herz gelegt, im Herzen wohnend ÇĀK. 67. हृदये संनिधाय *das Herz auf einen Punkt richten, sich sammeln* MUṆD. Up. 2.2.7. — 2) *Jmd zu Etwas ansetzen, Jmd Etwas übertragen*: यया सम्राट्वाधिकृतान्विनिपुङ्गे । एतान्प्राणानेतान्प्राणानधितिष्ठस्वेत्येवमेवैष प्राणः । इतरान्प्राणान्पृथक्पृथगेव संनिधत्ते PRAÇNOP. 3.4. — 3) *in der Nähe ansehen, beobachten*: ऋषीन्गन्धर्वा उपनिषेडुस्ते ह स्म संनिधत्तीदं वा अत्यरीरिचन्द्रमूनमक्रान्ति die G. gesellten sich zu den Rshi und beobachteten: hier haben sie zu viel, dort zu wenig gethan ÇĀT. Br. 11.2.1. संयामो वा एष संनिधीयते यः प्रयात्रैर्जितेन *wenn Jmd mit dem Pr. opfert, so ist das wie ein Kampf anzusehen* 1.5.3.6. — 4) *pass. in der Nähe —, gegenwärtig sein*: नवस्वपि वर्षेषु भगवान्प्राणायणः — अद्यापि संनिधीयते BHĀG. P. 5.17.14. संनिधास्ये च ते स्मृतः KATHĀS. 3.53. Vid. 273. स चाहं सह सख्या धनमित्रेण तत्र संन्यधिषि DAÇAK. in BENF. Chr. 190.9. संनिकृत in der Nähe befindlich, gegenwärtig —, da —, bei der Hand seiend, nahe bevorstehend MUṆD. Up. 2.2.1. GOBH. 2.10.41. नेच्चैः संनिकृतो हस्ते MBh. 4.130. गुरो संनिकृते M. 2.205. R. 2.54.5. R. GORR. 2.17.31. ÇĀK. 7.14. 26.7. 32.6. अस्मिन् — लतामण्डपे संनिकृतया त्वया भवितव्यम् 32.19. VIKR. 38.11. PĀNĀT. 37.19. BHĀG. P. 8.12.34. SĀH. D. 20.14. नित्यं संनिकृताभिस्तु श्रोषधीभिः फलैस्तथा । अतिथीन्पूजयामास MBh. 13.454. विपत्संनिकृता तस्य HIT. 1.68. कायः संनिकृतापायः 202. संनिकृतास्तपोवनमह्वरत्तयै भवत so v. a. bereit zu, gerüstet zu ÇĀK. 17.20. — Vgl. संनिधान, ंधि. — caus. *in die Nähe bringen, sich vergegenwärtigen*: वासुदेवस्य प्रियो तनूम् — परमेण समाधिना संनिधाप्य BHĀG. P. 5.18.1. 17.16. *pass. sich manifestieren, sich Jmd (gen.) in der Nähe zeigen*: यत्र ह वाव भगवान्हरिरस्यापि तत्रत्यानां निजजनानां वात्सल्येन संनिधाप्यत इच्छात्रपेण 7.8.

— निम् *viell. herausfinden*: निरन्त्रौ मघवा तं दधाति RV. 10.160.4. — परि 1) *herumlegen, herumsetzen, umlegen*: ये परिधिं पर्यधत्थाः VS. 2.17. ÇĀT. Br. 1.3.4. 2. परि पूषा हस्तं दधातु दर्शणम् RV. 6.34. 10. येनेन्द्राय वृक्षस्पतिर्वासः पर्यधात् PĀR. GRHJ. 2.2. med.: परि लाघे पुरं वयं विप्रं सहस्य धीमहि *wir legen dich als eine Wehr (Wall) um uns her* RV. 10.87.22. अर्वांसि दधिरे परि 5.18.4. partic. praet. pass.: प्रुलस्य चित्परिहितं यदज्ञः 1.121.10. परिहिताः गाढं रातसाः *in dichter Menge herumgestellt, — herumstehend* R. 6.37.31. — 2) *sich umlegen, umnehmen*; med.: परीदं वासो अघिधाः AV. 2.13.3. 14.1.45. VS. 4.2. ÇĀT. Br. 3.1.2. 13. 14.5.1. 4. ĀÇV. GRHJ. 4.4. KĀTJ. ÇR. 5.5.33. MBh. 7.9455. R. 2.37.6. R. GORR. 2.37.7. P. 3.1.20. Schol. वासश्च परिधाय MBh. 4.245. 12.6113. R. 1.2.10. R. GORR. 2.62.15. RAGH. 3.31. ÇĀK. 31.9. BHĀG. P. 4.21. 17.8.9.15. पांडुके KATHĀS. 3.49. अश्विनौ रूपं परिधाय मायाम् AV. 2.29.6. प्रावृक्षद्वासः सोमोय परिधातुवा उ 13.2. act. VOP. 21.17. नीवीमाश्च पर्यधात् BHĀG. P. 9.1.30. 18.9. Ohne obj. ein Gewand umlegen: क्रिया परिदधुः 1.4.5. गमनाय पर्यधात् 13.37. परिधाय चान्यथा MBh. 4.302. — 3) *umlegen, umgeben, bekleiden*: act.: परि ता धातसविता देवो वर्धसा AV. 13.1.20. वर्णान 1.22.1. ÇĀT. Br. 13.2.6.9. परि स्पर्शा अर्धात्सूर्येण *umgab mit Sonnenglanz* RV. 1.33.8. परि चिदृष्टयो दधुः 5.79.5. अद्भिः परिदधति KHĀND. Up. 5.2.2. तो दध्वा वानरा भीमं स्थितम् — गाढं परिदधुः सर्वे *umgaben, umzingelten ihn* R. 4.48.18. अकृतेन वाससा पतिः परिदध्यात् GOBH. 2.1.17. त्वां परिदधामि PĀR. GRHJ. 2.2. नाभिं पैतृदावैः परिदधति KĀTJ. ÇR. 5.4.16. med.: परि वो विश्वतो दध ऊर्ता धृतेन पर्यसा RV. 10.19.7. partic. praet. pass.: वप्रेः श्वेतचयाकरिः परिखाभिश्च सर्वतः — अथः परिहितामिव R. 5.9.15. स्वधया परिहिता AV. 12.5.3. नीलवसनार्थोक्तपरिहित DAÇAK. in BENF. Chr. 186.3.—4) *schliessen, Kunstausdruck für den Abschluss der Recitation in der Liturgie*: उत्तमया परिदधाति AIT. Br. 1.16.3.21. यैव होता परिधास्यति 4.10. ÇĀKĀ. Br. 7.10. TS. 2.4.11.2. परिहिते प्रातरनुवाके ĀÇV. ÇR. 6.9. यावन्मन्यत तावदधीत्येतया परिदधाति GRHJ. 3.3. — 5) (den Blick, das Auge) *herumgehen lassen auf*: दृष्टिं परिदधे कृष्णे रौहिणेये च दारुणाम् HARIV. 3743. — Vgl. परिधान fgg. Verwechselungen mit परिदा kommen hier und da vor, z. B. AV. 6.53.1 (während TS. 5.7.2.3 die richtige Form hat). ÇĀKĀ. ÇR. 8.3.5. einmal sogar im RV.: हुके रोषतं परि धेहि राजन् 2.30.9. — caus. परिधापयित्वा ved. P. 7.1.38. Sch. 1) *umnehmen lassen* (Jmd ein Gewand), *Jmd kleiden in*; mit dopp. acc.: तार्यं यजनानं परिधापयति TBh. 1.3.2. 1. ÇĀT. Br. 5.2.1.8. KĀTJ. ÇR. 14.3.3. KAUC. 34. PĀR. GRHJ. 2.1.2. RĀGA-TAR. 4.669. DAÇAK. in BENF. Chr. 200.7. — 2) *umgeben, bekleiden mit* (instr.): येन देवं संवितारं परि देवा अधाययन् (so ist die Lesart herzustellen) AV. 19.24.1. इन्द्रस्य त्वां वर्मणा परि धाययामः 46.4. 12.3.31. — *desid. im Begriff stehen sich umzulegen*: कृत्वाजिनानि परिधित्समान् MBh. 5.853.

— विपरि *vertauschen, wechseln*; med.: यथापयं वि परिदधावकै पुनस्ते TS. 1.5.1.1. व्यैवेनैनं परिधत्ते 5.3.11.3. KAUC. 17. वासो विपरि धाय JĀÉ. 1.196. MĀRK. P. 33.24. Mit Ergänzung von वासः GOBH. 1.2.37. — पुरम् s. u. d. W. — प्र 1) *vorsetzen, darbringen*: यद् त्यदा पुरमोळ्कस्य सोमिनः प्र मित्रासो न दधिरे स्वाभुवः RV. 1.131.2. — 2) *dahingeben*: अत्मानमेव